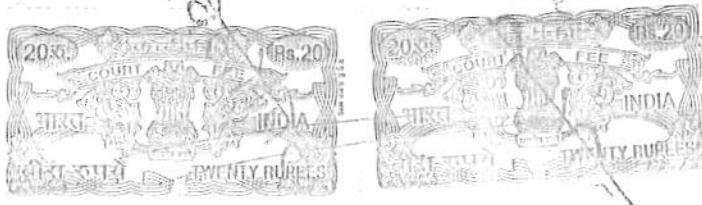


(२१.)



न्यायालय राजस्व मण्डल, म.प्र. ग्वालियर (म.प्र.)

प्रकरण क्रमांक: /2018 पुर्नावलोकन - ८५००/शिवपुरी/ग.वा.

द्वारा लाभान्वित
प्रत्येक तर्क देखु
जिनका १९-९-१८
द्वारा सम्बन्धित
करैरा, जिला- श्वालेश्वर (म.प्र.)

1. रमेशचन्द्र पुत्र देवी महं रमुवंशी
 2. श्रीमती चंपा पत्नि राश रघुवंशी
हाल निवारीगण नया अमोला ताल
करैरा, जिला- श्वालेश्वर (म.प्र.)
-पुर्नावलोकनकर्तागण/अनावेदकगण

बनाम

मानी
(मानी लोखेठा)
ग.वा.

श्रीमती विद्यादेवी (मृत) पत्नि रामचन्द्र

ब्राह्मण द्वारा वारिसाम :-

1. विनोद भार्गव पुत्र रामचन्द्र भार्गव,
2. भूषेन्द्र भार्गव पुत्र रामेश्वर भार्गव
निवारीगण-न्यू कॉलोनी ताल
करैरा, जिला- शिवपुरी (म.प्र.)

.....रेस्पोन्डेन्ट्स/आवेदकगण

पुर्नावलोकन याचिका अन्तर्गत धारा 51 म.प्र. भू-राजस्व संहिता 1959 विरुद्ध आदेश
दिनांक 24/08/2018 पारित द्वारा मानीय न्यायालय राजस्व मण्डल म.प्र. ग्वालियर
अन्तर्गत प्रकरण क्र. 1208-3/2011 निगरानी (श्रीमती विद्यादेवी (फौत) द्वारा वारिसाम
बनाम रमेशचन्द्र आदि), आदेश की प्रति संलग्न प्रत्युत।

मानीय न्यायालय,

पुर्नावलोकनकर्तागण की ओर से पुर्नावलोकन याचिका निम्नानुसार प्रत्युत की
रही है :—

1. यहकि, मानीय न्यायालय के समक्ष अनावेदकगण द्वारा पुर्नावलोकनकर्तागण
विरुद्ध निगरानी प्रत्युत की गई थी इस कारण वर्तमान याचिका के आगामी प्र
पुर्नावलोकनकर्तागण को अनावेदकगण एवं रेस्पोन्डेन्ट्स को आवेदकगण ने स
सम्बोधित किया जायेगा।

3

— 2 —

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

आदेश पृष्ठ

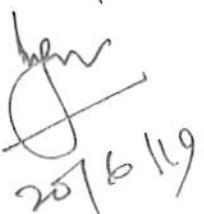
भाग - अ

प्रकरण क्रमांक पुनर्विलोकन 5500/2018/शिवपुरी/भूरा०

रमेशचन्द्र आदि

विरुद्ध

श्रीमती विद्यावेदी मृत वारिस

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही अथवा आदेश	प्रहकर्ण अभिभाषकों द्वारा के हस्ताक्षर
20-6-2019	<p>उभय पक्ष के विद्वान अभिभाषकों द्वारा प्रकरण की ग्राह्यता पर दिनांक 19-06-2019 को प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया।</p> <p>2/ आवेदकगण ने राजस्व मण्डल, म०प्र० के प्रकरण क्रमांक निगरानी 1208-तीन/2011 में पारित आदेश दिनांक 24-8-2018 के विरुद्ध इस न्यायालय में म०प्र० भू-राजस्व संहिता की धारा 51 के अतर्गत यह पुनर्विलोकन प्रस्तुत किया है।</p> <p>3/ उभय पक्ष के विद्वान अभिभाषकों द्वारा प्रस्तुत तर्कों के परिप्रेक्ष्य में प्रकरण में उपलब्ध दस्तावेजों एवं अभिलेख का अवलोकन किया। पूर्व पीठसीन अधिकारी ने निगरानी में पारित आदेश में यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रश्नाधीन भूमि वर्ष 2002 में विक्रय से वर्जित विलोपित होने के पश्चात आवेदकगण ने अनावेदिका मृतक विद्यावेदी के पक्ष में दिनांक 7-7-05 को विक्रय पत्र संपादित कराया, जिसके पश्चात अनावेदकगण के पक्ष में दिनांक 9-5-08 को नामांतरण भी संपादित हो गया। आवेदकगण का यह तर्क है कि उक्त विक्रय पत्र फर्जी था। आवेदकगण द्वारा यह बतलाने में असमर्थ रहे कि उनके द्वारा लगभग 14 वर्ष तक उक्त विक्रय पत्र को शून्य घोषित कराने के संबंध में क्या कार्यवाही की गई। विक्रय पत्र को शून्य घोषित करने की अधिकारिता व्यवहार न्यायालय को है। जबकि अनावेदिका मृतक विद्यावेदी ने विक्रय से वर्जित विलोपित देखकर प्रश्नाधीन</p>	 <p>20/6/19</p>

(3) ✓

प्रकरण क्रमांक पुनर्विलोकन 5500/2018/शिवपुरी/भू0रा0

रमेशचंद्र आदि

विजय

श्रीगती विद्यावेदी मृत वारिस

भूमि क्य की थी। तब ऐसी स्थिति में यह नहीं माना जा सकता कि इस प्रकरण में म0प्र0 भू-राजस्व संहिता 1959 की धारा 165(7ख) का उल्लंघन हुआ है। आवेदकगण द्वारा गलत तथ्य अधीनस्थ अपीलीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत कर अनावेदिका के पक्ष में हुये नामांतरण को निरस्त कराया है। अनावेदकगण अभिभाषक ने तर्क में बतलाया कि आवेदकगण द्वारा 17-1-2018 को प्रश्नाधीन भूमि का किसी अन्य व्यक्ति को विक्य कर दिया है। इसी कारण पूर्व पीठासीन अधिकारी द्वारा निगरानी प्रकरण में दोनों अपीलीय न्यायालयों के आदेशों को निरस्त कर वर्ष 2008 में अनावेदकों के पक्ष में नामांतरण को उचित पाया है। इसके अतिरिक्त आवेदकगण द्वारा पुनर्विलोकन आवेदन में ऐसी कोई महत्वपूर्ण बात/साक्ष्य या अभिलेख से प्रकट कोई भूल दर्शाने में असमर्थ रहे हैं जिससे मूल निगरानी में पारित आदेश में कोई हस्तक्षेप किया जा सके। फलस्वरूप यह पुनर्विलोकन आवेदन अस्वीकार किया जाता है।

पक्षकार सूचित हो। अभिलेख वापस भेजे जाये।
प्रकरण दाखिल रिकार्ड हो।

(आरा० के जैन) २०१६ (2019)
सदस्य